संस्थान समाचार

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा

(शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार की स्वायत्तशासी) संस्था और उसके केंद्रो की समाचार पत्रिका

■ प्रकाशन : वर्ष : 11 ■ अंक : 68 ■ अप्रैल 2025

छपते-छपते

विशिष्ट मानद विश्वविद्यालय

भारत सरकार द्वारा केंद्रीय हिंदी संस्थान आगरा को विशिष्ट मानद विश्वविद्यालय का दर्जा मिलने से संस्थानकर्मियों में हर्ष की लहर है। मुख्यालय आगरा सहित संस्थान के सभी क्षेत्रीय केंद्रों पर कार्यरत शैक्षणिक व प्रशासनिक कर्मियों ने केंद्र सरकार की सराहना करते हुए एक दूसरे को बधाइयाँ दी।

इस अंक में

निदेशक को मिला एनसीपीएसएल का अतिरिक्त प्रभार

केंद्रीय हिंदी संस्थान आगरा तथा केंद्रीय हिंदी निदेशालय दिल्ली के निदेशक प्रोफेसर सुनील बाबू राव कुळकर्णी ने राष्ट्रीय सिंधी भाषा संवर्धन परिषद (एनसी पीएसएल) के निदेशक पद का अतिरिक्त कार्यभार सँभाल लिया है।

(पृष्ठ 2 पर)

संस्थान के पूर्व उपाध्यक्ष को भावभीनी श्रद्धांजलि

केंद्रीय हिंदी संस्थान तथा अखिल भारतीय साहित्य परिषद के संयुक्त तत्त्वाधान में सुप्रसिद्ध साहित्यकार तथा केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल के पूर्व उपाध्यक्ष स्वर्गीय डॉ कमल किशोर गोयनका की स्मृति में एक श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया।

(पृष्ठ 8 पर)

सत्रांत समारोह सत्र 2024-25

हिंदी वैश्विक संप्रेषण की भाषा

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा मुख्यालय तथा दिल्ली क्षेत्रीय केंद्र पर सत्र 2024-25 का सत्रांत समारोह संपन्न हुआ। दिनांक 28 अप्रैल 2025 को दिल्ली केंद्र तथा दिनांक 29 अप्रैल 2025 को मुख्यालय आगरा के अटल बिहारी वाजपेयी अंतरराष्ट्रीय सभागार में आयोजित कार्यक्रम में संस्थान के वरिष्ठ पदाधिकारियों के साथ-साथ गणमान्य लोगो ने भी हिस्सा लिया तथा सभी विद्यार्थियों को प्रोत्साहित किया एवं उन्हें भावी जीवन में बड़े मुकाम हासिल करने की प्रेरणा दी। इस अवसर पर सत्र 2024-25 के दौरान संस्थान के विभिन्न पाठ्यक्रमों के शिक्षार्थियों को प्रमाण पत्र भी प्रदान किए गए।

दिनांक 29 अप्रैल 2025 मुख्यालय आगरा के अंतरराष्ट्रीय हिंदी शिक्षण विभाग से प्राप्त जानकारी के मुताबिक सत्र 2024-25 के दौरान उन्नीस देशों से आए 97 विद्यार्थियों को हिंदी-प्रशिक्षण पूर्ण करने के उपरांत अंक-पत्र एवं प्रमाण-पत्र प्रदान किए गए। समारोह की मुख्य अतिथि शिक्षा मंत्रालय के भाषा प्रभाग की सलाहकार श्रीमती मनमोहन कौर रहीं। समारोह की अध्यक्षता संस्थान के माननीय उपाध्यक्ष प्रो. सुरेन्द्र दुबे ने की। अपने अध्यक्षीय संबोधन में उन्होंने कहा कि भाषा-संचार के बदलते वैश्विक परिदृश्य में हिंदी के अध्यापक एवं प्रचारक अपनी बहुभाषी दृष्टि से सेतु-रचना करेंगे। संस्थान के निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी ने अपने प्रेरक उद्बोधन में छात्रों का मनोबल बढ़ाते हुए कहा कि हिंदी अब वैश्विक संप्रेषण-भाषा की ओर तेज़ी से अग्रसर है और इन प्रशिक्षित विद्यार्थियों की भूमिका इसमें निर्णायक होगी।

शैक्षिक समन्वयक, प्रो. हरिशंकर ने केंद्रीय हिंदी संस्थान के इतिहास, उपलब्धियों व अनुसंधान कार्य का परिचय दिया। अंतरराष्ट्रीय हिंदी शिक्षण के विभागाध्यक्ष डॉ. जोगेन्द्र सिंह मीणा ने स्वागत-वक्तव्य प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संयोजन एवं वार्षिक प्रतिवेदन डॉ. दीपा मणि बरुआ ने दिया, जबकि मंच संचालन डॉ. पुरुषोत्तम पाटील ने किया।

इस वर्ष पहली बार संस्थान ने अंतरराष्ट्रीय हिंदी शिक्षण विभाग की सभी पाँच कक्षाओं में अव्वल पाँच-पाँच स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को आगामी सत्र में द्वितीय-वर्षीय उन्नत पाठ्यक्रम में सीधे प्रवेश का प्रस्ताव दिया, जिसका विद्यार्थियों ने करतल ध्वनि के साथ स्वागत किया। कार्यक्रम के अंत में डॉ. परमान सिंह ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत कर समारोह के सफल आयोजन के लिए सभी अतिथियों, शिक्षकों, विद्यार्थियों एवं कर्मियों के प्रति आभार व्यक्त किया।

इससे पूर्व दिनांक 28 अप्रैल 2025 को केंद्रीय हिंदी संस्थान के दिल्ली केंद्र पर आयोजित सत्रांत समारोह की अध्यक्षता केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल के माननीय उपाध्यक्ष प्रो. सुरेन्द्र दुबे जी ने की। इस अवसर पर उन्होंने विद्यार्थियों को उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए आशीर्वाद दिया और कहा कि संस्थान में दी गई भाषा और संस्कृति की दीक्षा को वे अपने आचरण में परिलक्षित करें और हिंदी भाषा का प्रसार करने में अपना योगदान दें। समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित प्रो. नरेंद्र मिश्र ने गुरु-शिष्य परंपरा की महत्ता को रेखांकित किया और सभी विद्यार्थियों को इस परंपरा का अनुसरण करने की बात कही। केंद्रीय हिंदी संस्थान के निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी ने सभी विद्यार्थियों को उनके सफलता पर आशीर्वाद दिया। उन्होंने विभिन्न देशों से आए इन विद्यार्थियों को अपने-अपने देश में हिंदी भाषा का राजदूत बताया और उनसे अपेक्षा की कि वे निरंतर हिंदी के विकास में अपना योगदान देते रहेंगे।

समारोह में दिल्ली केंद्र की क्षेत्रीय निदेशक प्रो. अपर्णा सारस्वत ने सभी गणमान्य अतिथियों का स्वागत किया और सभी विद्यार्थियों को उनके भविष्य हेतु

शेष पृष्ठ 7 पर जारी

विदेशी पर्यटकों के लिए हिंदी स्पोकेन पाठ्यक्रम

अंतरराष्ट्रीय हिंदी शिक्षण विभाग में विदेशी पर्यटकों के लिए "बोलचाल की हिंदी पाठ्यक्रम (हिंदी स्पोकन पाठ्यक्रम)" का निर्माण किया गया। ज्ञात हो कि उक्त प्रयोजनार्थ अब तक बाह्य विषय विशेषज्ञों के मार्गदर्शन में दो कार्यशालाएँ संपन्न हो चुकी हैं। इसी क्रम में पाठ्यक्रम निर्माण को गति देने के लिए विभाग में तीसरी दो दिवसीय कार्यशाला दिनांक 22-23 अप्रैल, 2025 को संपन्न हुई।

कार्यशाला में पाठ्यक्रम की तय रूपरेखा के अनुसार जिन पंद्रह मोडयुल्स पर साठ प्रसंगों के अनुरूप पाठों का निर्माण किया जाना है उनमें से बाह्य विषय विशेषज्ञों एवं समिति सदस्यों द्वारा आठ मोडयुल्स के अठारह प्रसंगों पर पाठ बनाए गए।

बनाए गए पाठों पर बाह्य विषय विशेषज्ञों एवं आतंरिक सदस्यों के मध्य गहन चर्चा हुई और उन पर प्राप्त सुझावों के अनुसार पाठों में सुधार भी किए गए।

आने वाले समय में अगली कार्यशाला आयोजित किए जाने से पूर्व इस कार्यशाला में बनाए गए पाठों को अंतिम रूप दिया जाएगा एवं अन्य नए पाठ भी आतंरिक सदस्यों द्वारा बनाए जाएँगे।

इस दो दिवसीय कार्यशाला में बाह्य विषय विशेषज्ञों के रूप में प्रो.भरतसिंह एवं डॉ. जवाहर कर्णावत तथा आतंरिक समिति सदस्यों में विभागाध्यक्ष डॉ.जोगेन्द्र सिंह मीणा, समिति संयोजक डॉ.पुरुषोत्तम पाटील, डॉ.परमान सिंह, डॉ. कृष्ण कुमार पाण्डेय, डॉ.रेणु चौधरी, डॉ. शर्मा उपस्थित रहे।

प्रोफेसर सुनील बाबुराव कुळकर्णी बने राष्ट्रीय सिंधी भाषा संवर्धन परिषद के निदेशक

केंद्रीय हिंदी संस्थान आगरा तथा केंद्रीय हिंदी निदेशालय दिल्ली के निदेशक प्रोफेसर सुनील बाबुराव कुळकर्णी ने राष्ट्रीय सिंधी भाषा संवर्धन परिषद (एनसीपीएसएल) के निदेशक पद का अतिरिक्त कार्यभार संभाला। निदेशक को अतिरिक्त प्रभार मिलने पर केंद्रीय हिंदी संस्थान के सभी शैक्षणिक प्रशासनिक कार्मिकों ने हर्ष व्यक्त किया है। मालूम हो कि राष्ट्रीय सिंधी भाषा संवर्धन परिषद सिंधी भाषा के विकास और संवर्धन के लिए एक स्वायत्त संगठन है जो भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय के अंतर्गत काम करता है इसका उद्देश्य सिंधी भाषा को बढ़ावा देना विकसित करना और इसका प्रसार करना है साथ ही वैज्ञानिक और तकनीकी प्रगति को सिंधी भाषा में उपलब्ध कराना है।

पाठ्य-पुस्तक निर्माण कार्यशाला आयोजित

नई शिक्षा नीति (2020) के आलोक में सिक्किम राज्य के कक्षा 3 एवं 4 तक की पाठ्य-पुस्तक निर्माण संबंधी कार्यशाला दिनांक 07.04.2025 से 11.04.2025 तक केंद्रीय हिंदी संस्थान आगरा, मुख्यालय में आयोजित की गयी। उद्घाटन सत्र में निदेशक महोदय डॉ. सुनील बाबुराव कुळकर्णी 'देशगव्हाणकर, ने कक्षा 3 एवं कक्षा 4 तक की निर्माणाधीन पाठ्य-पुस्तकों अक्षरांजलि में विषय-सामग्री के चयन के साथ-साथ शब्द त्रुटि पर भी ध्यान केंद्रित कर संशोधन करने का सुझाव दिया।

इस अवसर पर प्रो. हरिशंकर, शैक्षिक समन्वयक, डॉ. सपना गुप्ता नवीकरण भाषा प्रसार विभाग, उपस्थित रहे। विभागाध्यक्ष डॉ. मीनाक्षी दुबे के संयोजन में डॉ. छुकी लेप्चा, हिंदी समन्वयक भाषाएँ, शिक्षा विभाग, डॉ. सोनाम ओंगम् भूटिया, हिंदी पी.जी.टी., भाषाएँ, शिक्षा विभाग, श्रीमती शोभा शर्मा, डी.ई.ओ. (टेक्निकल एसिस्टेंट) भाषा प्रशाखा, शिक्षा विभाग, एवं हिंदी विशेषज्ञ डॉ. शौर्यजीत सिंह, प्राध्यापक, आर. बी. एस. कॉलेज आगरा, विशेषज्ञों ने विधिवत इस कार्य को संपन्न किया। समापन सत्र में प्रो. हरिशंकर, शैक्षिक समन्वयक ने अपने संबोधन में नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) के अंतर्गत तैयार पुस्तक सामग्री को छात्रोंपयोगी तथा हिंदी भाषा के प्रति राष्ट्रीय धारा से जुड़ने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम बताया। प्रो. चंद्रकान्त कोठे, विभागाध्यक्ष, अध्यापक शिक्षा विभाग की उपस्थिति सराहनीय रही। कार्यशाला सहभगियों को प्रमाण पत्र वितरित किए गए।

कन्नड़ - हिंदी पर्याय कोश

केंद्रीय हिंदी संस्थान आगरा के मैसूर केंद्र पर दिनांक 18.4.2025 से 22.4.2025 तक पांच दिवसीय चतुर्थ कन्नड़- हिंदी पर्याय कोश कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला का संयोजन प्रो.टी. आर. भट्ट वरिष्ठ, सेवानिवृत्त प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, कर्नाटक विश्वविद्यालय, धारवाड़ द्वारा किया जा रहा है। इस पांच दिवसीय कार्यशाला में विशेषज्ञ के रूप में संयोजक के अलावा प्रो. संदीप रणधीरकर, विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग, कर्नाटक केंद्रीय विश्वविद्यालय, कर्नाटक, डॉ. लता कुळकर्णी, जे. एस. एस. कॉलेज, धारवाड़, डॉ.परमेश्वर हेगड़े, मैसूर, एवं डॉ आशा भद्री, हुबली धारवाड़ ने सहभागिता की।

मैसूर केंद्र के क्षेत्रीय निदेशक डॉ. रणजीत भारती ने सभी विशेषज्ञ को कार्यशाला में स्वागत एवं सफल आयोजन में सहयोग दिया। इस कार्यशाला द्वारा कन्नड़ एवं हिंदी की समान शब्दावलियों का एक कोश तैयार किया जाना है। जो कन्नड़ एवं हिंदी दोनों भाषा सीखने वाले विद्यार्थियों के लिए अत्यन्त उपयोगी होगा। इस कार्यशाला में मैसूर केंद्र के शैक्षिक सदस्य डॉ. योगेंद्र मिश्र, प्रशासनिक कर्मी श्री लक्ष्मीनारायण, श्री राघवेंद्र, एवं रियाना आदि ने सहयोग दिया।

दिल्ली केंद्र

हिंदी विश्वकोश की कार्यशाला आयोजित

केंद्रीय हिंदी संस्थान के दिल्ली केंद्र द्वारा संचालित हिंदी विश्वकोश परियोजना के तहत निर्माणाधीन इतिहास खंड की कार्यशाला दिनांक 21, 22 और 23 अप्रैल 2025 को केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल के उपाध्यक्ष प्रोफेसर सुरेंद्र दुबे के सानिध्य में दिल्ली केंद्र के समिति कक्ष में आयोजित की गई।

तीन दिवसीय कार्यशाला में खंड संपादकगण प्रोफेसर ईश्वर शरण विश्वकर्मा, डॉ संतोषा कुमार तथा परियोजना प्रभारी/दिल्ली केंद्र की क्षेत्रीय निदेशक प्रोफेसर अपर्णा सारस्वत ने हिस्सा लिया। कार्यशाला के दौरान परियोजना से जुड़े कार्मिकों की भी पूर्ण भागीदारी रही।

कार्यशाला में इतिहास खंड को शीघ्रातिशीघ्र अंतिम रूप प्रदान करने के क्रम में संपादकों की देखरेख में अपेक्षित सुधार संशोधन का कार्य किया गया। कुछ नई प्रविष्टियों को शामिल करने तथा कमजोर प्रविष्टियों का पुनर्लेखन कर खंड को समृद्ध करने पर भी सहमति बनी। कार्यशाला के दौरान अतिथियों के आवभगत, खान-पान आदि का दायित्व प्रधान संपादक के सहायक डॉक्टर पराक्रम सिंह ने निर्वहन किया।

निबंध में मेलिसा तो कविता में होन जुलि ने मारी बाजी

अंतरराष्ट्रीय हिंदी शिक्षण विभाग द्वारा आयोजित निबंध प्रतियोगिता में स्तर 100 की छात्रा मेलिसा प्रथम स्थान प्राप्त किया वहीं कविता प्रतियोगिता में स्तर 100 की होनजुलि ने प्रतिभागियों को पीछे छोड़ते हुए अव्वल स्थान प्राप्त किया।

सत्रांत समारोह के दौरान प्रस्तुत किए गए प्रतिवेदन के मुताबिक विदेशी विद्यार्थियों के लिए आयोजित हिंदी शिक्षण के पाठ्यक्रमों क्रमशः हिंदी भाषा दक्षता प्रमाण-पत्र (स्तर-100), हिंदी भाषा दक्षता डिप्लोमा (स्तर-200) एवं हिंदी भाषा दक्षता उच्च डिप्लोमा (स्तर-300) में सत्र-2024-25 में विद्यार्थियों की कुल संख्या -27 रही। क्रमशः स्तर 100 में 09, 200 में 14 एवं 300 में 04 विद्यार्थियों ने प्रवेश प्राप्त किया। सर्वाधिक 09 विद्यार्थी चीन देश के हैं जो सभी हिंदी भाषा दक्षता डिप्लोमा (स्तर-200) में प्रवेश पाने में सफल हुए। शैक्षिक केलेंडर के अनुसार विभाग की सभी शैक्षिक एवं साहित्यिक-सांस्कृतिक गतिविधियों में छात्रों ने हिस्सा लिया। विदेशी विद्यार्थियों ने दीपावली, क्रिसमस, होली मिलन मातृभाषा दिवस, विश्व हिंदी दिवस के मौके पर आयोजित कार्यक्रम में भागीदारी करने के साथ-साथ पुस्तक मेले का भ्रमण कर भारत की साहित्यिक सांस्कृतिक चेतना से ओत-प्रोत हुए।

इस अवसर पर विभिन्न प्रतियोगिताओं के घोषित परिणाम के मुताबिक निबंध लेखन प्रतियोगिता में कक्षा-100 की मेलिसा को प्रथम स्थान मिला। अयामे एबिना एवं आयाका इताकुरा को द्वितीय, पन्या थिप को तृतीय और एवलीन को सांत्वना पुरस्कार मिला। कक्षा-200 की देंगफु शिन को प्रथम, यांग देन को द्वितीय, वाङ कुन जी को तृतीय और यू ज्याश्वन को सांत्वना पुरस्कार मिला। कक्षा-300 के थेसंङ छवे को प्रथम, तोशिको ओत्सुका को द्वितीय और यूकी सोएदा को तृतीय स्थान मिला।

कविता प्रतियोगिता में कक्षा-100 की होन जुली ने प्रथम, पन्या थिप ने द्वितीय, आयाका इताकुरा ने तृतीय और मेलिसा को सांत्वना पुरुस्कार मिला। कक्षा-200 के ल्यू ज्यांग को प्रथम, किम योंग भी को द्वितीय, युज्याश्वन को द्वितीय और यांग देन को सांत्वना पुरस्कार मिला। कक्षा-300 की चिगुसा कामामामू को प्रथम, थेसंङ छवे को द्वितीय, तोशिको ओत्सुका को तृतीय और यूकी सोएदा को सात्वना पुरस्कार मिला।

छात्र पत्रिका विश्व भारती का लोकार्पण

अंतरराष्ट्रीय शिक्षण विभाग दिल्ली केंद्र द्वारा निर्मित छात्र पत्रिका हिंदी विश्वभारती 2024-25 का अतिथियों द्वारा लोकार्पण किया गया। इस अवसर पर संस्थान के निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी ने छात्रों के प्रयास की भूरि भूरि प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि अनेक देशों से आए विद्यार्थियों ने अपने अनुभवों को अपनी लेखनी से साझा किया है तथा भाषा के स्तर पर अपने को स्मृद्ध भी किया है। पत्रिका की संपादक डॉ. ऋचा गुप्त ने गहरी रूचि, लगन और स्नेह के साथ इसे सींचा है।

संपादकीय

कलावंत कमल किशोर

प्रिय पाठकों,

केंद्रीय हिंदी संस्थान के दिल्ली केंद्र के सभागार में आयोजित श्रद्धांजलि सभा में पूर्व केंद्रीय शिक्षा मंत्री, केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल के उपाध्यक्ष सहित राजधानी के अनेक ख्यातिलब्ध गणमान्य लोगों ने अपने-अपने तरह से डॉ कमल किशोर गोयनका (11 अक्टूबर 1938-1 अप्रैल 2025) को याद किया तथा उनके न होने को अपूरणीय क्षति बताया। उनका पुण्य स्मरण करते हुए मन स्मृतियों से तर-बतर है, किंतु जिसे संपादकीय कहा जाता है वैसा लिखने लायक कुछ याद नहीं आ रहा है। याद आ रहा है सिर्फ उनका बेहद प्रसन्न मुख मंडल, नुकीली नाक के ठीक ऊपर चौड़े फ्रेम वाले ऐनक के भीतर से झाँकती स्नेह सिक्त दो बड़ी आँखें। वे आँखें मुझे देख रही हैं और मैं सीधे उनसे कुछ पा रहा हूँ। मन बिल्कुल साफ और शांत है। वरिष्ठ आलोचक हजारी प्रसाद द्विवेदी जिसे इतिहास कहते हैं वह शायद ऐसी ही स्मृति का एक क्षण है जब अतीत वर्तमान बन जाता है।

प्रतिष्ठित व्यास सम्मान तथा केंद्रीय हिंदी संस्थान के पंडित राहुल सांकृत्यायन पुरस्कार से अलंकृत, केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल आगरा के पाँच साल तक उपाध्यक्ष रह चुके डॉ. गोयनका चार दशक तक दिल्ली विश्वविद्यालय में हिंदी के शिक्षक रहे और पाँच दशक से अधिक समय तक प्रेमचंद पर शोध करते रहे। उन्होंने साहित्यिक शोध और आलोचना के क्षेत्र में व्यापक काम किया है। उनकी अधिकांश पुस्तकें प्रेमचंद पर केंद्रित हैं।उनकी खोजी दृष्टि ने प्रेमचंद साहित्य की दशकों पुरानी धारणाओं को चुनौती दी और भारतीयता के व्यापक परिप्रेक्ष्य में उसकी पुनर्व्याख्या की। उन्होंने प्रेमचंद को मार्क्सवादी विचारधारा के संकुचित दायरे से बाहर निकाल कर एक भारतीय आत्मा का साहित्यिक शिल्पी सिद्ध किया।

अद्भुत व्यक्तित्व था उनका। वो चुप रहें तो भी बहुत कुछ कहता था उनका अरमानों से-प्रतिमानों से भरा चेहरा। अपनी चुप्पी में भी बहुत कुछ बोलता-सा। यूँ तो गोयनका जी में आपादमस्तक एक गर्वभरी सादगी विराजती थी लेकिन इस सादगी में वो करीनापन भी झलकता जो उन्हें रुचि-संपन्नता से तनिक और आगे धकेलता हुआ 'अभिजात' के भरम तक भी ले जाता था। लेकिन हमारी पीढ़ी के लोगों ने उनके संघर्षों को भी नजदीक से देखा और सुना है। विचारधारा की जिस नाव पर उन्होंने सवारी की उसके राह में आने वाली चुनौतियों के सामने कभी डिगे नहीं, डटकर खड़े रहे। कई मौकों पर इसका खामियाजा भी उठाया लेकिन झंडा नहीं झुकने दिया। उनके दौर में दिल्ली के साहित्याकाश में वामपंथी विचार का बोलबाला था, विश्वविद्यालयों में डॉ नागेंद्र और नामवर सिंह जैसे लोगों का रौब था। डॉक्टर गोयनका ने अपनी शोध साधना तथा तार्किक साहित्यिक बौद्धिकता को आगे कर सबसे लोहा लिया और साबित किया कि प्रेमचंद का मन 'गीता' और विवेकानंद से प्रभावित है और भारतीयता की सनातन चेतना का अनुसरण करता है।

गोयनका यानी शोध साधक समालोचक। केवल दिन-रात, सुबह-शाम, सभा-संगोष्ठियों के आलोचक नहीं। आठों पहर आलोचक। और आठों पहर तो आदमी भी आदमी नहीं रहता। मेरा मतलब नहीं रह पाता लेकिन एक गोयनका ही थे कि शक्ल से सूरत से, चेहरे से मोहरे से, चाल से ढाल से, बोली से बानी से, ताने से बाने से-सर से पाँव तक एक आलोचकीय आत्मा! वो याद है न फिराक ने कहा था- 'उसका सरापा हम से पूछो/चेहरा ही चेहरा है पांव से सर तक।'

साहित्य की नजर से देखें तो वो संघ प्रिय होते हुए भी जो कुछ भी हैं ज़रूरत से ज़्यादा नहीं हैं। लगता है ज़रूरत से ज़्यादा उन्हें कुछ भी दरकार नहीं। न ज़रूरत से ज़्यादा वे प्रशंसक हैं न आलोचक, न स्पष्टवादी न संकेतवादी, न यथार्थवादी न रहस्यवादी, न कलावादी न उपयोगितावादी। लेकिन जब कभी विचारधारा की बात आई वे जरूरत से ज्यादा वक्र हुए, उससे वे अपने-आपको सिद्ध भी किए और प्रसिद्ध भी! यह अपवाद नहीं उनका नैसर्गिक गुण है।

उनकी शोध दृष्टि का ही कमाल है की जो भी नुक्ता वे पैदा करते हैं,भले ही वह नुक्ता अपने आप या बीज रूप में कहीं से आया हो लेकिन जब वह उनकी खोजी दृष्टि में समाकर उनके लिखे में उतरता है तो वह नुक्ता, वह विचार उनका अपना हो जाता है, और ऐसा अपना कि अपना कहने वाले यानी मौलिकता का दावा करने वाले बगले झाँकने लगते हैं। कलावंतों में यही अनूठा गुण लक्षण होता है -

'कलावंत पर वस्तु ले, दैत रुचिर निज रंग/करत चाँदनी चँद है, रबि आतप लै अंग।।

गोयनका जी ने प्रेमचंद के साथ-साथ हजारी प्रसाद द्विवेदी, यशपाल के दुर्लभ संस्मरणों की पुस्तकें तैयार की। पंडित दीनदयाल उपाध्याय के व्यक्तित्व और एकात्म दर्शन पर प्रमाणिकता के साथ लिखा जिसे बाद में एनबीटी ने भी प्रकाशित किया।अभिमन्यु अनत को प्रतिष्ठित करने के साथ-साथ प्रवासी साहित्य के लिए प्रचुर काम किया। वे जब तक जिए,ठाठ से जिए। उनकी दो इच्छाएँ थी। वह प्रेमचंद की पत्रकारिता पर प्रेरक काम करना चाहते थे और अपने जीवन काल में केंद्रीय हिंदी संस्थान को विश्वविद्यालय के रूप में देखना चाहते थे। संस्थान परिवार की ओर से संस्थान को विश्वविद्यालय का दर्जा दिलाने के लिए हर संभव प्रयास किया जा रहा है। सरकार और समाज को भी इसके लिए आगे आना चाहिए क्योंकि सच्चे अर्थों में उनकी इच्छाओं को पूरा करना ही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

आनी जानी दुनिया में एक दिन सबको जाना है। प्रातः स्मरणीय गोयनका जी अब नहीं है लेकिन हमारी स्मृतियों में सदैव जीवित हैं, और रहेंगे। हिंदी साहित्य के इस विरले शब्द शिल्पी को शत-शत नमन....।।

प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी 'देशगव्हाणकर'
निदेशक

हिंदी शिक्षण मंडल के उपाध्यक्ष ने किया केंद्र का संदर्शन

केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल के उपाध्यक्ष प्रो. सुरेंद्र दुबे ने हैदराबाद केंद्र का संदर्शन किया एवं 481वें नवीकरण के समापन समारोह में अध्यक्ष के रूप में उपस्थित हुए। इस दौरान केंद्र की यूजीसी केयर लिस्टेड पत्रिका जनवरी-मार्च, 2024 का विमोचन किया। उन्होंने संस्थान के सभी कर्मचारियों के साथ अनौपचारिक बैठक की तथा संस्थान का निरीक्षण किया। उन्होंने संस्थान के प्रांगण में वृक्षारोपण किया तथा संस्थान के उज्ज्वल

भविष्य की कामना की तथा संस्थान के विकास के लिए सभी कर्मचारियों को हर तरह का सहयोग एवं मार्गदर्शन देने के लिए सदैव तत्पर रहने का आश्वासन दिया।

केंद्र के क्षेत्रीय निदेशक प्रो. गंगाधर वानोडे द्वारा बुके एवं शॉल पहनाकर उनका स्वागत किया गया तथा उनके उत्तम स्वास्थ्य की कामना करते हुए संस्थान के विकास के लिए उनके मार्गदर्शन की आशा की।

भाषा में निहित होती है संस्कृति भी : प्रो. सुरेन्द्र दुबे

केंद्रीय हिंदी संस्थान, हैदराबाद केंद्र द्वारा दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, खैरताबाद, हैदराबाद में बी.एड्. महाविद्यालय के छात्रों के प्रशिक्षण के लिए दि.01.04.2025 से दि.12.04.2025 तक '15वें हिंदी भाषा संचेतना शिविर' का आयोजन किया गया। दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, खैरताबाद के सभागार में आयोजित उद्घाटन कार्यक्रम की अध्यक्षता केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल, आगरा के उपाध्यक्ष प्रो. सुरेंद्र दुबे ने की। मुख्य अतिथि के रूप में साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित वरिष्ठ तेलुगु साहित्यकार एवं पूर्व कुलपति (पोट्टि श्रीरामुलु तेलुगु विश्वविद्यालय), प्रो. एन. गोपि तथा मुख्य वक्ता के रूप में केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी, विशिष्ट अतिथि के रूप में दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, आंध्र प्रदेश एवं तेलंगाणा की सचिव (प्रभारी) एवं संपर्क अधिकारी श्रीमती ए. जानकी, शिक्षा महाविद्यालय, द.भा.हिं.प्र. सभा, खैरताबाद के प्राचार्य डॉ. सी.एन. मुगुटकर उपस्थित थे।

इस अवसर पर अध्यक्षीय वक्तव्य में केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल, आगरा के उपाध्यक्ष माननीय प्रो. सुरेंद्र दुबे ने कहा कि अध्यापक होना अनेक पुण्यों का संचित फल है जो कई जन्मों में मिलता है। शिक्षक अपने कौशल के माध्यम से छात्रों में नई ऊर्जा का संचार करता है जो आगे चलकर देश के विकास में अहम् भूमिका निभाते हैं। उन्होंने आगे कहा कि भाषा कोई भी हो उसमें निहित संस्कृति एक ही होती है। जिस तरह हमारी पूजा पद्धति अगल-अलग हो सकती है मगर ईश्वर एक है।

मुख्य अतिथि प्रो. एन. गोपि ने अपने वक्तव्य में कहा कि जो विद्यार्थियों की संपदा एक शिक्षक के पास होती है वह किसी के पास नहीं होती। शिक्षक एक राष्ट्रपिता की भूमिका में राष्ट्र का निर्माण करता है और संपूर्ण राष्ट्र को एक सूत्र में बाँधता है। इस दौरान उन्होंने अपने जीवन के अनुभव भी साझा किए।

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के निदेशक एवं इस कार्यक्रम के मुख्य वक्ता प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी ने कहा कि इस शिविर के माध्यम से छात्र-छात्राओं का भाषिक कौशल निखर कर सामने आएगा और यह आदर्श शिक्षक बनकर समाज के सामने उभरेंगे। समाज में गुरु का दर्जा गोविंद से भी बढ़कर बताया गया है इसलिए चुनौतियों को स्वीकार करते हुए राष्ट्र का निर्माण करना ही शिक्षक का मुख्य कार्य है।

विशिष्ट अतिथि के रूप में श्रीमती ए. जानकी ने कहा कि हिंदी एक ऐसी भाषा है जो हमें आपस में जोड़कर रखती है। उन्होंने अपने अनुभव साझा करते हुए कहा कि शिक्षक हमेशा सीखने की प्रक्रिया में रहता है। वह समाज से सीखता है और फिर अपने अनुभवों से अपने छात्रों को सिखाता है। विशिष्ट अतिथि डॉ. सी.एन. मुगुटकर ने कहा कि हिंदी भाषा संचेतना शिविर के माध्यम से छात्रों को बहुत कुछ सीखने का मौका मिलेगा और उनके कौशल का विकास होगा।

प्रो. गंगाधर वानोडे ने प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए कहा कि आप सभी इस शिविर के माध्यम से अपने भाषाई कौशलों को निखारेंगे। इसके लिए सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना के क्रम में छात्र अपनी भाषाई त्रुटियों को सही कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि इसके लिए राष्ट्रीय चैनल पर प्रसारित समाचारों को ध्यान से सुनना चाहिए, जो मानक शब्दों में प्रसारित किया जाता है। साथ ही इस संचेतना शिविर के उद्देश्यों एवं रूपरेखा पर प्रकाश डाला।

इस पाठ्यक्रम के दौरान प्रो. गंगाधर वानोडे ने भाषाविज्ञान डॉ. फत्ताराम नायक ने हिंदी व्याकरण डॉ. दीपेश व्यास ने हिंदी साहित्य, डॉ. अरुणा देवी ने वाचन अभ्यास, लेखन कौशल, वार्तालाप अभ्यास, डॉ. डी. देसाई ने हिंदी के विविध रूप, शब्द निर्माण (उपसर्ग, प्रत्यय), मुहावरे, लोकोक्तियाँ, श्रीमती शैलषा नांदुरकर ने हिंदी शिक्षण में तकनीकी डॉ. वाई. ललिता कुमारी ने शैक्षिक अध्ययन की इकाइयाँ आदि विषयों का अध्यापन कार्य संपन्न किया। पाठ्यक्रम संयोजक केंद्रीय हिंदी संस्थान, हैदराबाद केंद्र के क्षेत्रीय निदेशक प्रो. गंगाधर वानोडे एवं पाठ्यक्रम प्रभारी डॉ. फत्ताराम नायक मंच पर उपस्थित रहे। इस अवसर पर केंद्रीय हिंदी संस्थान, हैदराबाद केंद्र से प्रकाशित यूजीसी केयर सूची में सम्मिलित 'समन्वय दक्षिण' पत्रिका के अक्टूबर-दिसंबर, 2024 अंक, जो प्रो. एन. गोपि जी पर केंद्रित है, का विमोचन केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल, आगरा के उपाध्यक्ष महोदय एवं साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त तेलुगु साहित्यकार प्रो. एन. गोपि जी के करकमलों द्वारा किया गया।

भाषा सुधार के लिए आवश्यक है प्रशिक्षण

भाषा संचेतना शिविर का समापन समारोह दिनांक 12.04.2025 को आयोजित किया गया। समापन समारोह की अध्यक्षता केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी ने आभासी माध्यम से की। विशेष अतिथि के रूप में शिक्षा महाविद्यालय, द.भा.हिं.प्र. सभा, खैरताबाद के प्राचार्य डॉ. सी.एन. मुगुटकर उपस्थित थे।

इस अवसर पर विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित डॉ. सी.एन. मुगुटकर ने कहा कि छात्रों के मन में जब प्रश्न उत्पन्न होते तो यह उनके सचेतन होने का प्रतीक है। केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी ने कहा कि जिन उद्देश्य को लेकर हम प्रशिक्षण में जुड़े उसकी कितनी पूर्ति हुई। शिक्षा के कारण हमें आध्यात्मिक ज्ञान भी ही मिलता है। भाषा सुधार के लिए ऐसे प्रशिक्षण बहुत आवश्यक हैं। हिंदी को स्वतंत्रता के बाद वह स्थान प्राप्त नहीं हुआ जो मिलना चाहिए। दो सप्ताह में प्राप्त ज्ञान को आगे अपने विद्यार्थियों में देना है। हिंदी आज पूरे विश्व में अपनी पहचान बना रही है।

इस दौरान क्षेत्रीय निदेशक प्रो. गंगाधर वानोडे तथा फत्ताराम नायक ने भी सम्बोधित किया। कार्यक्रम का सफल संचालन श्री प्रभाकर साहू तथा कुमारी मिली खमारी आभार व धन्यवाद ज्ञापन शेखर नायक ने दिया। कार्यक्रम के अंत में प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र वितरीत किए। राष्ट्रगान के साथ समापन समारोह संपन्न हुआ। इस कार्यक्रम में कुल 51 (महिला-27 पुरुष-24) प्रतिभागियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।

भाषायी कौशल विकास से खुलेगी रोजगार की राह : निदेशक

केंद्रीय हिंदी संस्थान, हैदराबाद केंद्र द्वारा अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह के माध्यमिक विद्यालय के हिंदी शिक्षकों के प्रशिक्षण के लिए दि.15.04.2025 से दि.26.04.2025 तक चले '482वें नवीकरण पाठ्यक्रम' का उद्घाटन समारोह दि. 15.04.2025 को सरकारी माध्यमिक विद्यालय, जंगलीघाट, श्री विजयपुरम के सभागार में संपन्न किया गया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी ने की। मुख्य अतिथि के रूप में प्राचार्य, राज्य शिक्षा संस्थान, श्री विजयपुरम श्रीमती संगीता चंद उपस्थित थीं। सरकारी माध्यमिक विद्यालय, जंगलीघाट की उप प्राचार्य श्रीमती अजीज फातिमा के साथ राज्य शिक्षा संस्थान, श्री विजयपुरम की पाठ्यक्रम समन्वयक श्रीमती रानी एवं श्रीमती गीता की गरिमामय उपस्थिति रही। इस अवसर पर पाठ्यक्रम संयोजक केंद्रीय हिंदी संस्थान, हैदराबाद केंद्र के क्षेत्रीय निदेशक प्रो. गंगाधर वानोडे एवं पाठ्यक्रम प्रभारी डॉ. फत्ताराम नायक, डॉ. मयंक त्रिपाठी, विभागाध्यक्ष (सूचना एवं भाषा प्रौद्योगिकी, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा), डॉ. राधा सगिली एवं अतिथि प्रवक्ता डॉ. रामकृपाल तिवारी उपस्थित रहे।

उद्घाटन समारोह में प्रतिभागियों के प्रति अपने विचार व्यक्त करते हुए निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी ने कहा कि जिन उद्देश्य को लेकर हम प्रशिक्षण में शामिल हुए हैं वह है भाषा द्वारा न सिर्फ एक दूसरे से संवाद स्थापित करना वरन यह भी समझना कि भाषा कौशल विकास का एक महत्वपूर्ण माध्यम भी है। शिक्षा के कारण हमें आध्यामिकता का ज्ञान भी मिलता है। भाषा सुधार के लिए ऐसे प्रशिक्षण बहुत आवश्यक हैं। रोजगार के लिए भाषा शिक्षण के माध्यम से कौशल विकास किस प्रकार संभव है।

इस कार्यक्रम का संचालन पाठ्यक्रम समन्वयक, राज्य शिक्षा संस्थान, श्री विजयपुरम श्रीमती गीता ने किया तथा केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के हैदराबाद केंद्र की डॉ. राधा सगिली, कार्यालय अधीक्षक ने आभार एवं धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

इस पाठ्यक्रम के दौरान प्रो. गंगाधर वानोडे ने भाषाविज्ञान तथा उसके विविध पक्ष डॉ. फत्ताराम नायक ने हिंदी व्याकरण के विविध पक्ष, डॉ. मयंक त्रिपाठी ने शिक्षा का अर्थ, उद्देश्य एवं महत्व, डॉ. एन. लक्ष्मी ने प्रयोजनमूलक हिंदी, प्रो. रामकृपाल तिवारी ने हिंदी साहित्य का इतिहास, प्रो. रमेश कुमार ने भारतीय ज्ञान परंपरा तथा भारतीय दर्शन, डॉ. शिवानी ने राजभूषण साहित्य शिक्षण आदि विषयों का अध्यापन कार्य संपन्न किया।

482वाँ नवीकरण पाठ्यक्रम

राज्य शिक्षा संस्थान के सभागार में आयोजित समापन समारोह कार्यक्रम की अध्यक्षता केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी ने की। मुख्य अतिथि के रूप में टैगोर राजकीय शिक्षा महाविद्यालय, श्री विजयपुरम की प्राचार्य डॉ. मंजू लता राव एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में राज्य शिक्षा संस्थान, श्री विजयपुरम की प्राचार्य श्रीमती संगीता चंद उपस्थित रहीं। इस अवसर पर पाठ्यक्रम संयोजक केंद्रीय हिंदी संस्थान, हैदराबाद केंद्र के क्षेत्रीय निदेशक प्रो. गंगाधर वानोडे एवं पाठ्यक्रम प्रभारी डॉ. फत्ताराम नायक एवं विशेष अतिथि डॉ. मयंक त्रिपाठी, विभागाध्यक्ष, (सूचना एवं भाषा प्रौद्योगिकी, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा), राज्य शिक्षा संस्थान की समन्वयक श्रीमती एन.सी. रानी तथा श्रीमती सुनीता शर्मा मंच पर उपस्थित रहे।

समापन समारोह की मुख्य अतिथि डॉ. मंजू लता राव, विशिष्ट अतिथि श्रीमती संगीता चंद, अध्यक्षता कर रहे केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी ने अपने विचार व्यक्त किए। इस कार्यक्रम का संचालन हाज़रा मंडल तथा सुमीत राय द्वारा किया गया। आभार एवं धन्यवाद ज्ञापन शिल्पा मिश्रा द्वारा प्रस्तुत किया गया। समापन समारोह के दौरान अतिथियों द्वारा 'द्वीप दर्शिका' हस्तलिखित पत्रिका का लोकार्पण किया गया। प्रतिभागियों को अतिथियों के द्वारा प्रमाण पत्र वितरित किए गए। पर-परीक्षण के आधार पर उत्तम अंक प्राप्त छात्रों को विशेष पुरस्कार दिए गए।

अंत में राष्ट्रगान से कार्यक्रम का समापन हुआ। इस '482वें नवीकरण पाठ्यक्रम' में कुल 48 (महिला-35, पुरुष-13) माध्यमिक विद्यालय के हिंदी शिक्षकों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा

(शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार)
हिंदी संस्थान मार्ग, आगरा-282005
मोबा. 9410423542/9412722463

प्रवेश सूचना (सत्र 2025-26)

एक वर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम

1. **स्नातकोत्तर अनुवाद सिद्धांत एवं व्यवहार डिप्लोमा**
   योग्यता: अंग्रेजी और हिंदी विषयों के साथ स्नातक
2. **पोस्टर एम.ए. अनुप्रयुक्त हिंदी भाषा विज्ञान डिप्लोमा**
   योग्यता: किसी विषय में एम.ए. तथा स्नातक स्तर पर एक विषय के रूप में हिंदी या स्नातक स्तर पर हिंदी माध्यम द्वारा अध्ययन
3. **हिंदी भाषा कौशल डिप्लोमा**
   योग्यता: किसी भी मान्यता प्राप्त बोर्ड से इंटरमीडिएट उत्तीर्ण
4. **पाठ संपादन एवं अशुद्धि शोधन डिप्लोमा**
   योग्यता: किसी भी विषय में स्नातक उत्तीर्ण (स्नातक स्तर पर हिंदी एक विषय के रूप में होना अनिवार्य है)

आवेदन-पत्र संस्थान वेबसाइट www.hindisansthan.in के माध्यम से ऑनलाइन भरकर इसकी प्रिंट प्रति, आवश्यक दस्तावेज तथा रू. 200/- (रू. दो सौ मात्र) के डिमांड ड्राफ्ट के साथ उपर्युक्त पते पर भेजना अनिवार्य है। डिमांड ड्राफ्ट सचिव, केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल, आगरा (Secretary, Kendriya Hindi Shikshan Mandal, Agra) के पक्ष में देय होना चाहिए। आवेदन पत्र जमा करने की अंतिम तिथि 15 जून, 2025 है।

-कुलसचिव

हिंदी भाषा संचेतना शिविर का आयोजन

केंद्रीय हिंदी संस्थान आगरा, अहमदाबाद केंद्र द्वारा 15 से 28 अप्रैल 2025 तक 'एन. एस पटेल आर्ट्स कॉलेज (स्वायत्त) आणंद (गुजरात) में 'हिंदी भाषा संचेतना शिविर' का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में 106 स्नातक तृतीय वर्ष के छात्रों निर्धारित पाठ्यक्रम के अनुसार प्रक्षिक्षण प्रदान किया गया। शिविर के उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में प्रोफेसर दिलीप मेहरा अध्यक्ष हिंदी विभाग सरदार वल्लभभाई पटेल विश्वविद्यालय आणंद ने उपस्थित रहकर कार्यक्रम की गरिमा बढ़ाई और अपने सारगर्भित वक्तव्य से लाभांवित किया। कॉलेज ट्रस्ट के मैनेजिंग ट्रस्टी डॉ. भीखूभाई पटेल, प्राचार्य डॉ. प्रतीक्षा पटेल और परीक्षा नियामक डॉ. जे.डी. ने भी अपने विचार रखें। कार्यक्रम में हिंदी विभाग से एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. कनुभाई, डॉ. जयेन्द्रसिंह महिड़ा, डॉ. चिराग परमार, डॉ. किरण सिंह बारैया तथा क्षेत्रीय निदेशक डॉ. सुनील कुमार ने हिस्सा लिया।

निर्धारित पाठ्यक्रम के अनुसार शिविर में डॉ. सुनील कुमार (क्षेत्रीय निदेशक), द्वारा भाषा, डॉ. चिराग परमार सहायक प्रोफेसर, 'एन.एस. पटेल (स्वायत्त) कॉलेज, आणंद, (गुजरात) द्वारा शब्द समूह, डॉ. के. के. वैष्णवः पूर्व प्रचार्य, सरकारी स्नातक महाविद्यालय गांधीनगर, देवनागरी लिपि, डॉ. प्रतीक्षा पटेल प्राचार्य एन.एस. पटेल (स्वयत्त) कॉलेज, आणंद (गुजरात) द्वारा मुहावरे लोकोक्ति, के साथ-साथ डॉ. जयेन्द्रसिंह महीड़, डॉ. किरणसिंह बरैया, डॉ. कनु भाव, आदि ने अध्यापन का कार्य किया।

दिनांक 28 अप्रैल 205 को शिविर के समापन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. दीपेंद्र सिंह जाडेजा प्रोफेसर हिंदी विभाग महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय बदौदा उपस्थित रहे। कॉलेज ट्रस्ट के ट्रस्ट के संयुक्त मंत्री अंवेषभाई बी. पटेल ने भी उपस्थित रह कर कार्यक्रम की गरिमा बढ़ाई और मंच से अपना बहुमूल्य संबोधन प्रदान किया, कार्यक्रम अध्यक्ष के रूप में प्रोफेसर सुनील बाबुराव कुळकर्णी जी निदेशक केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा ने अध्यक्ष के रूप में ऑनलाईन संबोधन प्रदान कर प्रतिभागियों को प्रोत्साहित किया और 'हिंदी भाषा संचेताना शिविर' प्रशिक्षण पर विस्तार से प्रकाश डाला।

प्राचार्य डॉ. प्रतीक्षा पटेल और परीक्षा नियामक डॉ. जे.डी. ने भी मंच से सभागार को संबोधित किया, कार्यकम में हिंदी विभाग से एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. कनुभाई, डॉ. जयेन्द्रसिंह महिड़ा, डॉ. चिराग परमार, डॉ. किरण सिंह बारैया ने उपस्थित रहकर कार्यकम की गरिमा बढ़ाई। प्रतिभागी छात्र साबिया पठान, विकास कांजिया और निमेश भारवाड़ ने अपनी बात रखी। शिविर मे प्रतिभाग करने वाले मंहमद रेहान मलेक ने प्रथम वोहरा इलमा ने द्वितीय और मत्रैयी कमलेश कुमार छड़ोतरिआ ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। अंत में डॉ. चिराग परमार, ने आभार व्यक्त किया।

मैसूर केंद्र

हिंदी में बढ़ रही रोजगार की संभावनाएँ

दिनांक 21.04.2025 को केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के मैसूर केंद्र द्वारा हैदराबाद कर्नाटक शिक्षा संस्थान द्वारा संचालित श्रीमती वीरम्मागंगसिरी महिला महाविद्यालय, कलबुर्गी के स्नातक स्तरीय विद्यार्थियों हेतु आयोजित 12 दिवसीय 21 अप्रैल, 2025 से 03 मई, 2025 तक आयोजित होने वाले द्वितीय हिंदी भाषा संचेतना शिविर का उद्घाटन किया गया।

इस शिविर में 64 प्रतिभागियों (59 छात्राएँ एवं 5 छात्रों) ने पंजीकरण कराया है।

शिविर के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता केंद्रीय हिंदी संस्थान के माननीय निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी ने की। इस शिविर का उद्घाटन कर्नाटक विधान परिषद सदस्य एवं संस्था अध्यक्ष श्री शशीलनमोशी ने किया। संचेतना शिविर के संयोजक एवं मैसूर केंद के क्षेत्रीय निदेशक डॉ. रणजीत भारती ने स्वागत भाषण के दौरान शिविर में सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया और सभी को केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के उद्देश्य एवं कार्यशैली से सभी को परिचित कराया।

शिविर के आयोजन में महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. राजेंद्रकोंडा, उप-प्राचार्य प्रो. वीना एच, डॉ. उमा आर तथा हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. प्रेमचंदचव्हाण ने स्वागत किया।

कार्यक्रम का संचालन प्रतिभागी छात्रा कुमारी अंजलिराज पुरोहित ने किया। अंत में मैसूर केंद्र के शैक्षिक सदस्य डॉ. योगेंद्र मिश्र ने कर्नाटक में हिंदी के प्रति बढ़ते रुझान की सराहना की और सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया। इस अवसर पर डॉ. रामलिंगा भोसले, डॉ. झानोभा, डॉ. अफशाबेगम, डॉ. मिलन, डॉ. दयानंद शास्त्री सहित अनेक शिक्षक और छात्र उपस्थित थे।

विशेष अतिथि व्याख्यान

मैसूर केंद्र के क्षेत्रीय निदेशक डॉ. रणजीत भारती द्वारा दिनाँक 16.04.2025 को संत जोसेफ महिला कालेज रमनहल्ली, मैसूर की ओर से आयोजित विशेष अतिथि व्याख्यान दिया गया। व्याख्यान का विषय- हिंदी भाषा साहित्य एवं प्रयोग था। इस व्याख्यान में 60 छात्राएँ उपस्थित थी। इस व्याख्यान के दौरान डॉ. पृथ्वी एस. शिरहट्टी, प्राचार्या, संत जोसेफ महिला कॉलेज, श्री नवीन कुमार, प्रशासक, डॉ. शोभा डी, उपस्थित थे।

गुवाहाटी केंद्र

मौलिक लेखन के लिए आगे आएँ छात्र: निदेशक

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के गुवाहाटी केंद्र द्वारा जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (डाइट), गेजिंग, सिक्किम के डी.एल.एड. द्वितीय सत्र के छात्रों के लिए दिनांक 22.04.2025 से 01.05.2025 तक डाइट, गेजिंग (सिक्किम) में हिंदी भाषा संचेतना शिविर पाठ्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्रीमती पारुमिता राई, प्राचार्य, डाइट, गेजिंग (सिक्किम) ने की। औपचारिक स्वागत सत्कार डॉ. चंद्रशेखर चौबे, क्षेत्रीय निदेशक, गुवाहाटी केंद्र ने किया।

पाठ्यक्रम के रिसोर्स पर्सन श्री लक्ष्मी प्रसाद शर्मा ने सिक्किम राज्य में संपर्क भाषा के रूप में हिंदी की बढ़ती लोकप्रियता एवं महत्व पर विस्तार से प्रकाश डाला। पाठ्यक्रम के प्रथम दिन नामांकन के साथ-साथ प्रशिक्षणार्थियों के व्यावहारिक भाषायी ज्ञान को जानने के उद्देश्य से पूर्व परीक्षण लिया गया। इस पाठ्यक्रम में 49 छात्रों ने नामांकन लिया, जिनमें 13 (तेरह) छात्र एवं 36 (छतीस) छात्राएँ सम्मिलित थीं।

दिनांक 01.05.2025 को हिंदी भाषा संचेतना शिविर पाठ्यक्रम का समापन समारोह आयोजित किया गया। इस समापन समारोह में प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी, निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा ऑनलाइन माध्यम से कार्यक्रम के अध्यक्ष के रूप में सादर उपस्थित रहे। साथ ही कुलसचिव श्री अंकुश औंधकर, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा भी ऑनलाइन माध्यम से उपस्थित रहे। समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में श्रीमती पारुमिता राई, प्राचार्य, डाइट, गेजिंग (सिक्किम) की सादर उपस्थिति रही। कार्यक्रम के अध्यक्ष प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी, निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा ने छात्रों को संबोधित किया और हिंदीतर भाषी राज्यों में हिंदी के प्रचार-प्रसार में केंद्रीय हिंदी संस्थान की भूमिका से सभी को अवगत कराते हुए हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु इस प्रकार के प्रशिक्षण कार्यक्रमों के आयोजन की आवश्यकता एवं हिंदी के वैश्विक महत्व को रेखांकित किया। उन्होंने प्रतिभागी छात्रों को हिंदी विषय में उच्च शिक्षा के साथ-साथ सृजनात्मक एवं मौलिक लेखन के लिए प्रेरित किया। प्रतिभागी छात्र योगेश शर्मा ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत करते हुए कार्यक्रम में उपस्थित सभी अतिथियों के प्रति आभार प्रकट किया। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान के साथ किया गया।

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा की ओर से आयोजित केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल के पूर्व उपाध्यक्ष कमल किशोर गोयनका की श्रद्धांजलि समारोह को संबोधित करते हुए निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी।

जानकी देवी मेमोरियल कॉलेज भारतीय भाषा समिति एवं आई.क्यू.ए.सी. के तत्वावधान में आयोजित सांस्कृतिक एकता और भारतीय भाषाएँ विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी में अध्यक्ष के रूप में निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी।

गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर तथा केंद्रीय हिंदी निदेशालय, नई दिल्ली के तत्वावधान में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी।

केंद्रीय हिंदी संस्थान मुख्यालय आगरा में आयोजित सिक्किम पाठ्य पुस्तक निर्माण कार्यशाला में उपस्थित विषय विशेषज्ञों के साथ निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी।

एसडी संगम टीवी चैनल के स्टूडियो परिसर में उपस्थित होकर सतमोला कवियों की चौपाल कार्यक्रम के अंतर्गत काव्य पाठ हेतु उपस्थित कवियों का सम्मान और हिंदी तथा मराठी में काव्यपाठ करते हुए निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी।

केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल के पूर्व उपाध्यक्ष की स्मृति में आयोजित श्रद्धांजलि सभा के बाद लिए गए समूह चित्र में बाएँ से श्रीनिवास त्यागी, प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी, पूर्व केंद्रीय शिक्षा मंत्री रमेश पोखरियाल निशंक, अतुल कोठारी, प्रो. सुरेन्द्र दुबे तथा प्रवीण आर्य।

पृष्ठ 1 का शेष...

सस्नेह मंगलकामनाएँ दीं। इसके पश्चात वरिष्ठ प्रोफेसर, प्रो. योगेंद्र कुमार ने वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत करते हुए वर्ष भर हुए क्रियाकलापों का वर्णन किया।

सत्रांत समारोह के अवसर पर विशिष्ट अतिथियों द्वारा अंतरराष्ट्रीय हिंदी शिक्षण विभाग की छात्र पत्रिका 'हिंदी विश्व भारती 2024-25 का भी विमोचन किया गया। कार्यक्रम में उपरांत समारोह के तदुपरांत सभी विद्यार्थियों ने सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति दी तथा संस्थान में अपने अध्ययन के अनुभव को साझा किया।

अंत में, इस अवसर पर सत्र 2024-25 में आयोजित सभी शैक्षिक एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं के विजेता विद्यार्थियों को पुरस्कार प्रदान किए गए तथा सभी के वार्षिक परीक्षाफल की घोषणा हुई और उन्हें प्रमाण पत्र प्रदान किए गए। कार्यक्रम का धन्यवाद ज्ञापन दिल्ली केंद्र के प्रोफेसर, प्रो. धनजी प्रसाद तथा संचालन सहायक प्रोफेसर, डॉ ऋचा गुप्त ने किया।

अर्थांतर

'चट' और 'चट'

एक 'चट' 'चटकना' वाला है और दूसरा 'चट' 'चाटना' वाला। पहला 'चट' 'चट-चट' आवाज़ से संबंधित है और दूसरा, खान-पान से संबंधित है (जो इस उदाहरण में दीख रहा है-बराती सारा खाना चट कर गए)। तीसरा 'चट' ('चटपट' में) 'झट' का कमज़ोर रूप है।

'चटकना' के 'चट' को ध्वनि-अनुकरणात्मक धातु मान कर इस का अर्थ 'किसी चीज़ के टूटने की ध्वनि' और 'किसी चीज़ के चटकने से होनेवाला शब्द' बताया जाता है। इस के प्रयोग के कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं :-

'छत की कड़ियाँ चट-चट कर के टूटने लगीं। शीशा पहले चटका, फिर चट से टुकड़े-टुकड़े हो गया। उँगलियाँ चटकने पर चट-चट बोलती हैं। 'चटकनी' 'चट' से खुलती-बंद होती है। लकड़ी के जलने पर कई बार चट-चट शब्द होता है।' खड़ाऊँ को 'चट्टी' इसलिए कहा जाता है कि चलते समय वह चट-चट करती है। 'चटाचट' में निरंतर चट-चट होती है।

चटाक' को 'चट' ध्वनि की बड़ी बहन समझिए, जो 'चट' की तुलना में तगड़ी आवाज़वाली होती है।

जूतियाँ चटकाते समय शायद चट-चट नहीं होती क्योंकि 'जूतियाँ चटकाना' (मारे-मारे फिरना, बिना जूतियाँ पहने हुए भी) एक मुहावरा है।

दूसरा 'चट'। इसे 'चाटना' से संबंधित इन शब्दों में देखिए- (संज्ञा) 'चटनी' और 'चाट-पकौड़ी'; (विशेषण) 'चटपटा' और 'चाटू, चट्टू, चट्टो, चटोरा'।

'चटकारा, चटखारा' का अर्थ है-किसी 'चटपटी' वस्तु को 'चाटते' समय अथवा किसी स्वादिष्ट वस्तु को खाते समय, जीभ के तालु से टकराने पर होनेवाली 'चट-चट' ध्वनि। इस में 'चाटना'-वाले 'चट' के अर्थ की ग़लत घुसपैठ मानिए, क्योंकि चटकारे लेने के लिए खाद्य-पदार्थ का 'चटपटा' होना या उसे 'चाटना' ज़रूरी नहीं है। प्रधान संपादक के सहायक डॉक्टर पराक्रम सिंह तो बातें भी चटकारे ले-ले कर करते हैं।

प्रस्तुति : अनिल तिवारी

प्रकाशन विभाग

संस्थान प्रकाशनों की बिक्री से संबंधित भुगतान को ऑनलाइन स्वीकार करने की सुविधा उपलब्ध है इसके लिए पृथक से खाता खोला गया है। क्यू आर कोड के माध्यम से भी भुगतान किया जा सकता है। खाता विवरण इस प्रकार है-

Account Holder's Name:
THE KENDRIYA
HINDI SHIKSHANA MANDAL AGRA
Account Number : 42583260224
IFSC : SBIN0017686
MICR : 282002047
Branch : KHANDARI CROSSING AGRA

नोट: 1. संस्थान की प्रकाशन सूची संस्थान वेबसाईट www.hindisansthan.in पर उपलब्ध है।

2. सूची में से चयनित पुस्तकों का क्रयादेश ई-मेल publicationmanagerkhs@gmail.com पर भेजा जा सकता है।

Merchant Name :
THE KENDRIYA HINDI
SHIKHSANA MANDAL
UPI ID : thekhsmagra@sbi

स्मृति शेष

कें.हिं.शि.मं. के पूर्व उपाध्यक्ष,

स्व. डॉ. कमल किशोर गोयनका को भावभीनी श्रद्धांजलि

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के दिल्ली क्षेत्रीय केंद्र में बुधवार, दिनांक 9 अप्रैल 2025 को सुप्रसिद्ध साहित्यकार तथा केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल के पूर्व उपाध्यक्ष, स्व. डॉ. कमल किशोर गोयनका की स्मृति में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया।

गत 1 अप्रैल को डॉ. गोयनका जी का देहावसान हो गया। सौ से अधिक पुस्तकों के लेखक गोयनका जी मुंशी प्रेमचंद के साहित्य के सुपरिचित शोधकर्ता एवं प्रवासी हिंदी साहित्य के प्रतिभा संपन्न अध्येता थे। ऐसे महान व्यक्तित्व के परलोक गमन पर साहित्य जगत, संस्थान परिवार, गोयनका जी के कुटुंबी जनों के साथ-साथ अनेक साहित्यप्रेमी तथा छात्र भी श्रद्धांजलि देने पहुँचे।

वरिष्ठ हिंदी साहित्यकार तथा भारत सरकार के पूर्व शिक्षा मंत्री रमेश पोखरियाल 'निशंक' ने गोयनका जी के साथ अपने अनमोल अनुभवों को साझा करते हुए उनके जीवन से अथक श्रम तथा सरल व्यक्तित्व की प्रेरणा लेने की बात कही। केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल के उपाध्यक्ष प्रो. सुरेंद्र दुबे ने गोयनका जी के लेखों में प्रेमचंद के अनछुए पक्षों को साझा करते हुए उनकी सूक्ष्म एवं शोधपरक दृष्टि को रेखांकित किया। कें. हिं. संस्थान के निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी ने संस्थान के हित में गोयनका जी की प्रेरणा से निर्मित योजनाओं जिनमें संस्थान को विश्वविद्यालय का दर्जा दिया जाना भी शामिल है, पर प्रकाश डाला।

भारतीय भाषा समिति, शिक्षा मंत्रालय के अध्यक्ष डॉ. चमू कृष्ण शास्त्री ने गोयनका जी की अद्वितीय स्मृति क्षमता के बारे में बताया। सभा के आरंभ में दिल्ली केंद्र की क्षेत्रीय निदेशक प्रो. अपर्णा सारस्वत द्वारा गोयनका जी के व्यक्तित्व, साहित्यिक जीवन तथा संस्थान से जुड़े संबंधों पर चर्चा की गई।

अखिल भारतीय साहित्य परिषद की दिल्ली प्रांत मंत्री डॉ सुनीता गुग्गा, हरियाणा साहित्य अकादमी के पूर्व अध्यक्ष डॉ. पूरनमल गौर, अखिल भारतीय साहित्य परिषद के दिल्ली प्रांत अध्यक्ष डॉ. अवनिजेश अवस्थी, इग्नू दिल्ली से प्रो. नरेंद्र मिश्र, वाराणसी के जीएसटी जॉइंट कमिश्नर डॉ. शमशेर जमदग्नि, दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी बोर्ड के बोर्ड अध्यक्ष डॉ. रामशरण गौर, पद्मश्री स्वर्गीय जगदीश चतुर्वेदी की सुपुत्री अनुभूति चतुर्वेदी, कमल संदेश के संपादक डॉ. नाथ बख्शी, शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास के राष्ट्रीय सचिव अतुल कोठारी, अखिल भारतीय साहित्य परिषद के राष्ट्रीय पदाधिकारी डॉ. प्रवीण आर्य, साहित्य परिषद के दिल्ली प्रांत कार्यकारी अध्यक्ष डॉ. विनोद बब्बर, केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल के पूर्व उपाध्यक्ष डॉ. अनिल शर्मा जोशी, स्वर्गीय कमल किशोर गोयनका जी के सुपुत्र डॉ. संजय गोयनका तथा देशभर से आए अन्य नामचीन पदाधिकारियों ने भी गोयनका जी को भावांजलि प्रस्तुत की।

कार्यक्रम में कें. हिं. संस्थान मुख्यालय और दिल्ली केंद्र के शिक्षक तथा प्रशासनिक कार्मिकों ने भी परलोक गामी आत्मा को श्रद्धा सुमन अर्पित किए। ▢

जन्म 11 अक्टूबर, 1938
मृत्यु 01 अप्रैल, 2025

"वह पथ क्या पथिक कुशलता क्या जिस पथ में बिखरे शूल न हो। नाविक की धैर्य परीक्षा क्या जब धाराएं प्रतिकूल न हो"। बाबू जयशंकर प्रसाद की यह पंक्तियां कमल किशोर गोयनका पर हु-ब-हू सटीक बैठती है। प्रेमचंद के मानसपुत्र के रूप में चर्चित गोयनका ता-उम्र धारा के विपरीत चलते हुए अपने शत पर अडिग रहे तथा प्रेमचंद को वामपंथी खांचे से खींचकर ले आए और तथ्यों तर्कों के साथ उन्हें राष्ट्रवादी साहित्यकार के रूप में प्रतिष्ठित करने में अग्रणी भूमिका अदा की जिसका हिंदी साहित्य सदैव ऋणी रहेगा।

उल्लेखनीय गतिविधियाँ/ उपलब्धियाँ/प्रतिभागिता:

(1) संस्थापक महासचिव – 'प्रेमचंद जन्म शताब्दी राष्ट्रीय समिति', दिल्ली (1979 से) (2) प्रधानमंत्री – भारतीय हिंदी परिषद, इलाहाबाद (1993 से मई 1997 तक) (3) अध्यक्ष – अखिल भारतीय साहित्य परिषद, दिल्ली प्रदेश (995 से 2000 तक) (4) सदस्य कार्यकारिणी – हिंदी अकादमी, दिल्ली सरकार, दिल्ली (1995 से 1999 तक) (5) सदस्य कार्यकारिणी – हिन्दुस्तानी एकेडेमी, उत्तर-प्रदेश सरकार, इलाहाबाद (1 जनवरी, 1993 से 31 दिसंबर, 2001 तक) (6) सदस्य कार्यकारिणी – ऑथर्स गिल्ड ऑफ इण्डिया, नई दिल्ली (7) उपाध्यक्ष – भारतीय लेखक संगठन, नई दिल्ली (8) आजीवन सदस्य – दिल्ली विश्वविद्यालय, हिंदी अनुसंधान परिषद, दिल्ली (9) अतिथि प्राध्यापक – नागपुर विश्वविद्यालय, नागपुर (17 मार्च, 1983 से 30 मार्च, 1983 तक) (10) सदस्य – सरकारी समिति, विश्व हिंदी सम्मेलन, लंदन-1999 और सूरीनाम-2003।

मान्यता/पुरस्कार/सम्मान:

(1) भारतीय भाषा परिषद, कोलकाता का 'नथमल भुवालका पुरस्कार' से सम्मानित (2) हिंदी अकादमी, दिल्ली द्वारा दो बार पुरस्कृत एवं सम्मानित (3) भारत के कई महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों, साहित्यिक-अकादमियों तथा संस्थाओं द्वारा प्रेमचंद संबंधी मौलिक कार्य के लिए सम्मानित (4) उत्तर-प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ का 'साहित्य भूषण' पुरस्कार, 1998 (5) केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा का पं. राहुल सांकृत्यायन पुरस्कार (6) हिन्दी प्रचारिणी सभा, मॉरिशस, 2002 (7) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र पुरस्कार (भारत सरकार), 2008 (8) स्व. विष्णु प्रभाकर पुरस्कार, बरेली, 2011 (9) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल आलोचना पुरस्कार, साहित्य अकादेमी, भोपाल, 2011 (10) अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच, कोलकाता द्वारा भावरमल सिंघी सम्मान (11) केके बिड़ला फाउंडेशन का व्यास सम्मान। ▢

संरक्षक
प्रो. सुरेन्द्र दुबे

प्रधान संपादक
प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी

संपादक
डॉ. अपर्णा सारस्वत

संपादन सहयोग
अनिल तिवारी

टाइप सेटिंग
योगेन्द्र सिंह राणा

मुद्रक : एजुकेशनल स्टोर्स, गाजियाबाद (उ.प्र.)

संस्थान समाचार में प्रकाशित समाचारों का स्रोत केंद्रीय हिंदी संस्थान के विभिन्न विभागों/केंद्रों से प्राप्त सामग्री है। संस्थान समाचार के संबंध में अपनी प्रतिक्रिया और सुझाव संपादक के पास भेज सकते हैं। संस्थान समाचार का ई-मेल: sansthansamacharkhs2021@gmail.com

सचिव, केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल आगरा-282005 द्वारा वितरण हेतु दिल्ली केंद्र से प्रकाशित।